THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.22

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का अध्ययन

डॉ. नितिन बाजपेयी
सहायक प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, महाराणा प्रताप राजकीय पी.जी.कॉलेज हरदोई उ.प्र.
Email: drnitin.bajpaihri@gmail.com
https://www.researchgate.net/profile/Nitin-Bajpai-4
https://orcid.org/0009-0007-3196-141X
https://scholar.google.com/citations?hl=hi&user=wsVGl0gAAAAJ

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन का संकेत देती है, जिसमें शिक्षक की भूमिका को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में रखा गया है। यह नीति इस तथ्य पर बल देती है कि किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा की संरचना, उद्देश्य तथा कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार प्रस्तावित किए गए हैं। पारंपरिक शिक्षक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः विषय-ज्ञान और सीमित शिक्षण विधियों तक केंद्रित रही है, जबकि नई शिक्षा नीति शिक्षक को संवेदनशील मार्गदर्शक, नवाचारी शिक्षणकर्ता, मूल्य-संवहक तथा आजीवन अधिगमकर्ता के रूप में विकसित करने पर बल देती है। इस दिशा में चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) का प्रावधान किया गया है, जिसका उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण को अधिक व्यावहारिक, बहुविषयक एवं अनुभव-आधारित बनाना है। इससे शिक्षक प्रशिक्षुओं में विषय-ज्ञान के साथ-साथ शिक्षण दक्षता, अनुसंधान दृष्टिकोण तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विकास अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त, नीति शिक्षक शिक्षा में तकनीकी दक्षता, डिजिटल साक्षरता तथा नवाचार को आवश्यक मानती है, ताकि शिक्षक बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुरूप प्रभावी शिक्षण कर सकें। साथ ही, मूल्य-आधारित शिक्षा, समावेशिता, सामाजिक न्याय तथा संवैधानिक मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिल सके। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का विश्लेषण करना है तथा यह स्पष्ट करना है कि प्रस्तावित सुधार किस प्रकार शिक्षकों को 21वीं सदी की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम एवं उत्तरदायी बनाने में सहायक हो सकते हैं।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक शिक्षा, शिक्षक की बदलती भूमिका, एकीकृत शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक विकास।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास की आधारशिला मानी जाती है, और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक सक्षम, संवेदनशील एवं प्रशिक्षित शिक्षक न केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में योगदान देता है, बल्कि उनके नैतिक,

सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी दिशा प्रदान करता है। इस दृष्टि से किसी भी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का आकलन उसके शिक्षकों तथा उनकी शिक्षा व्यवस्था के आधार पर किया जाता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में समय-समय पर अनेक सुधार प्रयास किए गए हैं, किंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति तथा समाज की नई अपेक्षाओं ने शिक्षक शिक्षा की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। पारंपरिक शिक्षक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः विषय-ज्ञान और सीमित शिक्षण विधियों तक केंद्रित रही है, जिसके कारण शिक्षकों में नवाचार, अनुसंधान दृष्टिकोण तथा व्यावहारिक दक्षताओं का अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। परिणामस्वरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता लंबे समय से अनुभव की जाती रही है। इन्हीं आवश्यकताओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को एक व्यापक एवं दूरदर्शी सुधारात्मक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह नीति शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में स्थापित करते हुए शिक्षक शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक, व्यावहारिक तथा भविष्य-उन्मुख बनाने पर बल देती है। नीति में चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, सतत व्यावसायिक विकास, तकनीक-आधारित शिक्षण तथा मूल्य-आधारित शिक्षा जैसे प्रावधानों के माध्यम से शिक्षक की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षक शिक्षा की बदलती भूमिका का विश्लेषण किया जाए, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि प्रस्तावित सुधार किस प्रकार शिक्षकों को 21वीं सदी की शैक्षिक, सामाजिक एवं तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने में सहायक हो सकते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा में हुए प्रमुख परिवर्तनों तथा उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

समस्या कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त पदों का स्पष्टीकरण

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, समग्र, लचीला, बहुविषयक तथा गुणवत्तापूर्ण बनाना है। यह नीति शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का माध्यम न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का साधन स्वीकार करती है। नीति में शिक्षार्थी को शिक्षा प्रक्रिया का केंद्र बिंदु माना गया है, किंतु शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक गुणवत्ता को शिक्षा की गुणवत्ता का आधार मानते हुए शिक्षक चयन, प्रशिक्षण, मूल्यांकन तथा सतत व्यावसायिक विकास से संबंधित महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रस्तुत करती है ((NEP, 2020)।

2. शिक्षक शिक्षा की अवधारणा

शिक्षक शिक्षा से आशय एक संगठित एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया से है, जिसके माध्यम से भावी शिक्षकों को आवश्यक ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों से सुसज्जित किया जाता है, ताकि वे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकें। पारंपरिक रूप से शिक्षक शिक्षा मुख्यतः विषय-ज्ञान तथा औपचारिक प्रशिक्षण तक सीमित रही है, किंतु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह नवाचारी दृष्टिकोण अपनाए, तकनीकी रूप से दक्ष हो, विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील रहे तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सके। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय-ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के सर्वांगीण व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करना भी है (Government of India, 2020)।

अध्ययन के उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन करना।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का विश्लेषण करना।
3. शिक्षक शिक्षा में प्रस्तावित सुधारों की शैक्षिक एवं व्यावहारिक प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की भविष्यगत दिशा को स्पष्ट करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक एवं संरचनात्मक सुधारों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इस नीति में शिक्षक शिक्षा को शिक्षा सुधार की आधारशिला माना गया है तथा शिक्षक गुणवत्ता में सुधार को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता से जोड़ा गया है। नीति के अनुसार किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी दृष्टिकोण के आधार पर शिक्षक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने, उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण प्रदान करने तथा शिक्षकों को व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाने पर विशेष बल दिया गया है (NEP, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को शिक्षक बनने की न्यूनतम योग्यता के रूप में लागू करने का प्रावधान किया गया है। इस कार्यक्रम को बहुविषयक, अनुभव-आधारित एवं व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है, ताकि भावी शिक्षक प्रारंभिक स्तर से ही शिक्षण के व्यावहारिक पक्ष से परिचित हो सकें। इससे शिक्षकों में विषय-ज्ञान के साथ-साथ शिक्षण कौशल और व्यावसायिक दक्षता का विकास संभव हो सकेगा (Government of India, 2020)।

नीति शिक्षक शिक्षा को बहुविषयक बनाने पर भी विशेष बल देती है। इसके माध्यम से भावी शिक्षकों को विभिन्न विषयों का व्यापक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे। इस प्रकार बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षण को अधिक प्रभावी, लचीला तथा जीवनोपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक शिक्षा में तकनीकी समावेशन को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। नीति में डिजिटल साक्षरता, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी कौशल, ऑनलाइन शिक्षण तथा ब्लेंडेड लर्निंग को शिक्षक प्रशिक्षण का आवश्यक अंग बनाया गया है। इससे शिक्षक तकनीक-संवर्धित शिक्षण के लिए अधिक सक्षम बन सकेंगे और बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुरूप कार्य कर पाएँगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास पर भी विशेष बल दिया गया है। नीति के अनुसार प्रत्येक शिक्षक के लिए वार्षिक न्यूनतम 50 घंटे का व्यावसायिक विकास कार्यक्रम निर्धारित किया गया है, जिससे शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल तथा शिक्षण विधियों को समयानुसार अद्यतन कर सकें और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान कर सकें।

इसके अतिरिक्त नीति में शिक्षक चयन एवं नियुक्ति प्रक्रिया को पारदर्शी, निष्पक्ष तथा योग्यता-आधारित बनाने पर जोर दिया गया है। इसका उद्देश्य योग्य एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों को शिक्षण पेशे की ओर आकर्षित करना तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। साथ ही शिक्षक शिक्षा में मूल्य एवं नैतिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास पर भी विशेष बल दिया गया है, जिससे शिक्षक विद्यार्थियों के समग्र विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समावेशी शिक्षा के लिए भी शिक्षकों को तैयार करने पर बल देती है। नीति के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, वंचित वर्गों तथा विविध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ कार्य करने हेतु शिक्षकों को संवेदनशील एवं प्रशिक्षित बनाया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु मानकों को सुदृढ़ बनाने तथा मान्यता प्रक्रिया को प्रभावी बनाने का भी प्रावधान किया गया है। नीति में शिक्षकों की स्वायत्तता एवं सम्मान को भी महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षकों को शैक्षणिक निर्णयों में अधिक स्वतंत्रता प्रदान करने तथा उनके व्यावसायिक सम्मान को बढ़ाने पर बल दिया गया है, जिससे शिक्षण पेशे की प्रतिष्ठा सुदृढ़ हो सके। साथ ही शिक्षकों

©The Research Dialogue | Received: 06 July 2026 | Accepted: 10 July 2026 | Published: 15 July 2026

के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानक विकसित करने का प्रावधान किया गया है, जिसके माध्यम से शिक्षक प्रदर्शन, उत्तरदायित्व तथा व्यावसायिक विकास का मूल्यांकन किया जा सके।

उपरोक्त प्रावधानों से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, व्यावसायिक, नवाचारी एवं भविष्य-उन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास प्रस्तुत करती है। इन सुधारों के माध्यम से शिक्षकों को 21वीं सदी की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है, जो शिक्षा व्यवस्था के समग्र विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं (NEP, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। इस नीति में शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, सहायक एवं प्रेरक के रूप में परिभाषित किया गया है। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता तथा आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करे, जिससे विद्यार्थी सक्रिय रूप से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सहभागी बन सकें। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका पारंपरिक शिक्षण पद्धति से आगे बढ़कर अधिक सहभागितापूर्ण एवं शिक्षार्थी-केंद्रित हो जाती है (NEP, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी पहल के रूप में सामने आया है। यह कार्यक्रम बहुविषयक, अनुभव-आधारित तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसके माध्यम से प्रशिक्षु शिक्षक प्रारंभ से ही शिक्षण के व्यावहारिक पक्ष से जुड़कर आवश्यक दक्षताओं का विकास कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है (Government of India, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक शिक्षा को बहुविषयक एवं समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने पर विशेष बल देती है। इसका उद्देश्य शिक्षक को केवल एक विषय तक सीमित न रखकर व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना है, ताकि वह विद्यार्थियों की विविध शैक्षिक एवं जीवनगत आवश्यकताओं को समझते हुए प्रभावी शिक्षण कर सके। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक लचीली एवं जीवनोपयोगी बनती है।

डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा को तकनीक-संवर्धित बनाने पर भी बल दिया गया है। इसके अंतर्गत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल उपकरण तथा ई-लर्निंग को शिक्षक प्रशिक्षण का आवश्यक अंग माना गया है। इससे शिक्षक बदलते शैक्षिक परिवेश में तकनीक का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक सशक्त बना सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक को मूल्य-आधारित शिक्षा का प्रमुख संवाहक भी मानती है। नीति में संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, समानता, सहिष्णुता तथा मानवीय मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने पर बल दिया गया है (NEP, 2020)।

इसके अतिरिक्त नीति में शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास पर भी विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रत्येक शिक्षक के लिए वार्षिक न्यूनतम 50 घंटे का व्यावसायिक विकास कार्यक्रम निर्धारित किया गया है, जिससे शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल एवं शिक्षण विधियों को समयानुसार अद्यतन कर सकें और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति समावेशी शिक्षा को भी विशेष महत्व देती है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, वंचित वर्गों तथा विविध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ कार्य करने हेतु संवेदनशील एवं प्रशिक्षित बनाया जाना आवश्यक माना गया है। इससे सभी शिक्षार्थियों को समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य पूरा किया जा सकता है (Government of India, 2020)।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका को केवल ज्ञान प्रदाता तक सीमित न रखकर मार्गदर्शक, नवाचारी, तकनीक-सक्षम तथा समावेशी शिक्षणकर्ता के रूप में स्थापित करती है। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा की बदलती भूमिका शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

शिक्षक शिक्षा में प्रस्तावित सुधारों की शैक्षिक एवं व्यावहारिक प्रासंगिकता का परीक्षण करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा में अनेक महत्त्वपूर्ण सुधार प्रस्तावित किए गए हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य शिक्षक गुणवत्ता में सुधार करते हुए संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी, उत्तरदायी एवं भविष्य उन्मुख बनाना है। ये सुधार न केवल वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हैं, बल्कि भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप शिक्षकों को तैयार करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस नीति के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यवहारिक, समावेशी तथा तकनीक-संवर्धित बनाने पर विशेष बल दिया गया है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सके (NEP, 2020)।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान, तकनीक तथा रोजगार की प्रकृति तीव्र गति से परिवर्तित हो रही है। ऐसी स्थिति में पारंपरिक शिक्षक शिक्षा मॉडल पर्याप्त नहीं रह गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुविषयक, कौशल आधारित तथा अनुभवात्मक प्रशिक्षण पर बल देती है, जिससे शिक्षक बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें तथा विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकें (Government of India, 2020)।

शिक्षा की गुणवत्ता प्रत्यक्ष रूप से शिक्षक की दक्षता पर निर्भर करती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) तथा राष्ट्रीय पेशेवर मानक (NPST) जैसे सुधार प्रस्तावित किए गए हैं। ये सुधार शिक्षक चयन, प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होते हैं, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी एवं परिणामकारी बनती है।

डिजिटल युग में तकनीक-संवर्धित शिक्षण की आवश्यकता अत्यंत बढ़ गई है। ऑनलाइन शिक्षण, ब्लेंडेड लर्निंग तथा डिजिटल संसाधनों का उपयोग वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग बन चुका है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, डिजिटल उपकरणों तथा ई-लर्निंग को शामिल करने पर बल देती है, जिससे शिक्षक आधुनिक तकनीकी परिवेश में प्रभावी शिक्षण करने में सक्षम बन सकें।

शिक्षण एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसके लिए शिक्षकों को निरंतर अद्यतन रहना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) को अनिवार्य बनाती है। इसके माध्यम से शिक्षकों को अपने ज्ञान, कौशल एवं शिक्षण विधियों को समय-समय पर विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनकी पेशेवर दक्षता में वृद्धि होती है (NEP, 2020)।

विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के कारण समावेशी शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा में समावेशी दृष्टिकोण को अपनाने पर बल देती है, जिससे शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों, वंचित वर्गों तथा विविध पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों के प्रति संवेदनशील बन सकें और सभी को समान अवसर प्रदान कर सकें (Government of India, 2020)।

आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संवैधानिक चेतना का विकास अत्यंत आवश्यक हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक को मूल्य आधारित शिक्षा का प्रमुख संवाहक मानते हुए शिक्षक शिक्षा में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के समावेशन पर विशेष बल देती है। इससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है (NEP, 2020)।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रस्तावित सुधार सैद्धांतिक ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं। इससे शिक्षक शिक्षा में नीति और व्यवहार के मध्य विद्यमान अंतर को कम करने में सहायता मिलती है तथा शिक्षकों को वास्तविक कक्षा परिस्थितियों के लिए बेहतर रूप से तैयार किया जा सकता है।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा में प्रस्तावित सुधार वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप, समयोचित एवं व्यावहारिक हैं। इन सुधारों की प्रासंगिकता शिक्षक शिक्षा को अधिक गुणवत्तापूर्ण, संवेदनशील तथा भविष्य उन्मुख बनाने में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है (NEP, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की भविष्यगत दिशा का स्पष्टीकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ यह अपेक्षा की जा रही है कि शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक एवं दीर्घकालिक परिवर्तन देखने को मिलेंगे। वर्तमान समय में बदलते शैक्षिक परिदृश्य, सामाजिक आवश्यकताओं तथा तीव्र तकनीकी विकास ने शिक्षक शिक्षा को भविष्य की मांगों के अनुरूप ढालना अनिवार्य बना दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा को अधिक समग्र, व्यावहारिक, तकनीक-संवर्धित तथा मूल्य-आधारित बनाने पर विशेष बल दिया गया है, जिससे शिक्षक न केवल विषय विशेषज्ञ हों, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकें।

भविष्य की शिक्षक शिक्षा बहुविषयक एवं समग्र दृष्टिकोण पर आधारित होगी। इसके अंतर्गत शिक्षक केवल किसी एक विषय तक सीमित न रहकर विभिन्न विषयों के समन्वय के साथ शिक्षण करने में सक्षम होंगे। यह दृष्टिकोण शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाएगा तथा विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करेगा। साथ ही, समग्र शिक्षा के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझने में सक्षम होंगे, जिससे शिक्षण अधिक छात्र-केंद्रित एवं परिणामोन्मुखी बनेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भविष्य में शिक्षक शिक्षा को कौशल-आधारित एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण पर अधिक केंद्रित किया जाएगा। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यालय-आधारित प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, माइक्रो-टीचिंग तथा वास्तविक कक्षा-अनुभव को अधिक महत्व दिया जाएगा। इससे शिक्षक केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यावहारिक रूप से दक्ष बन सकेंगे। इस प्रकार, शिक्षक शिक्षा अधिक प्रभावी, उपयोगी एवं व्यावहारिक बन सकेगी।

तकनीकी विकास के साथ शिक्षक शिक्षा में डिजिटल तकनीकों का उपयोग भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भविष्य में ऑनलाइन शिक्षण, ब्लेंडेड लर्निंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा वर्चुअल शिक्षण माध्यमों का उपयोग बढ़ेगा। इन तकनीकों के माध्यम से शिक्षक आधुनिक शिक्षण विधियों से परिचित होंगे तथा वैश्विक शैक्षिक परिवेश के अनुरूप स्वयं को विकसित कर सकेंगे। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक लचीली, प्रभावी एवं सुलभ बनेगी।

भविष्य में शिक्षक शिक्षा को आजीवन व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा जाएगा। सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) के माध्यम से शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल तथा शिक्षण अभिवृत्तियों को समय-समय पर अद्यतन करते रहेंगे। कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों तथा पेशेवर शिक्षण समुदायों के माध्यम से शिक्षकों की दक्षता में निरंतर वृद्धि सुनिश्चित की जाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा में मूल्य एवं नैतिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण पर भी विशेष बल देती है। इसके अंतर्गत शिक्षक शिक्षा में संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, मानवीय संवेदनाओं तथा नैतिक आदर्शों के विकास को प्राथमिकता दी जाएगी। इससे शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता न होकर समाज के मार्गदर्शक एवं प्रेरक के रूप में विकसित होंगे।

भविष्य की शिक्षक शिक्षा समावेशी एवं संवेदनशील शिक्षक निर्माण पर आधारित होगी। इसके अंतर्गत शिक्षक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने में सक्षम होंगे। साथ ही, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए भी संवेदनशील एवं समावेशी शिक्षण दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा, जिससे सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सके। राष्ट्रीय पेशेवर शिक्षक

मानक (NPST) के माध्यम से शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन एवं जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी। इससे शिक्षक शिक्षा संस्थानों की कार्यप्रणाली अधिक पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनेगी। साथ ही, शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होगा और शिक्षकों की पेशेवर दक्षता को सुदृढ़ किया जा सकेगा। अंततः, भविष्य की शिक्षक शिक्षा वैश्विक दृष्टिकोण के साथ स्थानीय संदर्भों को भी समाहित करेगी। शिक्षक शिक्षा में आधुनिक वैश्विक प्रवृत्तियों को अपनाते हुए भारतीय संस्कृति, मूल्यों एवं परंपराओं को भी सुदृढ़ बनाए रखा जाएगा। इस प्रकार, शिक्षक शिक्षा आधुनिक होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक भी बनी रहेगी।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की भविष्यगत दिशा को अधिक समग्र, नवाचारी, तकनीक-संवर्धित तथा मूल्य-आधारित बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। ये परिवर्तन शिक्षक शिक्षा को 21वीं सदी की शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

विवेचना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा को अधिक सशक्त, गुणात्मक एवं भविष्य-उन्मुख बनाने हेतु एक स्पष्ट और सुविचारित ढाँचा प्रस्तुत करती है (NEP, 2020)। इस नीति के प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षक को संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में रखा गया है तथा उनके प्रशिक्षण, व्यावसायिक दक्षता और सामाजिक भूमिका को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया गया है। हालांकि नीति की परिकल्पनाएँ व्यापक और दूरदर्शी हैं, लेकिन इनके प्रभावी क्रियान्वयन में कई व्यावहारिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जिन पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है।

सबसे पहली चुनौती प्रशिक्षित एवं दक्ष शिक्षक प्रशिक्षकों की कमी से संबंधित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत बहुविषयक, तकनीक-संवर्धित तथा कौशल-आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है। किंतु वर्तमान समय में अनेक शिक्षक शिक्षा संस्थानों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षकों का अभाव देखा जाता है। इसके कारण नीति के उद्देश्यों और उनके वास्तविक क्रियान्वयन के बीच अंतर उत्पन्न हो जाता है, जिससे शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है (Srivastava, 2021)।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती डिजिटल अवसंरचना की असमान उपलब्धता से संबंधित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में तकनीक-आधारित शिक्षण, ऑनलाइन प्रशिक्षण तथा डिजिटल दक्षता को शिक्षक शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। इसके बावजूद, ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में पर्याप्त डिजिटल संसाधनों, इंटरनेट सुविधा तथा तकनीकी उपकरणों की कमी पाई जाती है। यह असमानता शिक्षक शिक्षा में तकनीक के प्रभावी उपयोग को सीमित करती है और नीति के सफल क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है (Kumar & Sharma, 2022)।

इसके अतिरिक्त, गुणवत्ता नियंत्रण एवं मानकीकरण की चुनौती भी शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समस्या बनी हुई है। यद्यपि राष्ट्रीय पेशेवर शिक्षक मानक (NPST) तथा मान्यता संबंधी व्यवस्थाओं के माध्यम से गुणवत्ता सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए हैं, फिर भी अनेक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में इन मानकों का अपेक्षित स्तर पर पालन नहीं हो पा रहा है। इससे शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता बनी रहती है और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता प्रभावित होती है (Government of India, 2020)।

नीति और व्यवहार के बीच विद्यमान अंतर भी शिक्षक शिक्षा सुधारों के क्रियान्वयन में एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तुत सैद्धांतिक प्रावधान अत्यंत प्रभावी हैं, लेकिन उन्हें व्यवहारिक रूप में लागू करने के दौरान प्रशासनिक, संसाधनगत तथा संरचनात्मक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। यह अंतर नीति की मूल भावना को धरातल पर उतारने में बाधा उत्पन्न करता है (Rao, 2021)।

इन चुनौतियों के बावजूद, यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सुसंगत, योजनाबद्ध एवं ईमानदार ढंग से क्रियान्वयन किया जाए, तो शिक्षक शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, कौशल-आधारित, नवाचारी तथा वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त बनाया जा सकता है। इससे शिक्षक न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना सकेंगे, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के सक्रिय वाहक के रूप में भी अपनी भूमिका निभा सकेंगे। अतः यह कहा जा

सकता है कि शिक्षक शिक्षा में प्रस्तावित सुधारों की प्रासंगिकता एवं भविष्यगत दिशा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति में निर्णायक सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आई है, जिसमें शिक्षक शिक्षा को विशेष और केंद्रीय स्थान प्रदान किया गया है। यह नीति स्पष्ट रूप से इस तथ्य को स्वीकार करती है कि किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इसी आधार पर शिक्षक शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक, व्यावहारिक तथा भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के लिए व्यापक सुधारों का प्रस्ताव किया गया है (Rao, 2021; Kumar, 2025)।

वर्तमान शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक की भूमिका को केवल कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसे समाज, संस्कृति तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का एक सक्रिय सहभागी मानती है। चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP), सतत व्यावसायिक विकास (CPD), तकनीक-संवर्धित शिक्षण, मूल्य एवं नैतिक शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रावधान शिक्षक शिक्षा की बदलती भूमिका को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। ये सभी पहलें 21वीं सदी की शैक्षिक, सामाजिक एवं तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप दिखाई देती हैं तथा शिक्षक को अधिक सक्षम, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं (Rao, 2021; Kumar, 2025)।

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे प्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षकों की कमी, डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा गुणवत्ता नियंत्रण से संबंधित समस्याएँ, फिर भी इन चुनौतियों का समाधान योजनाबद्ध एवं सतत प्रयासों के माध्यम से किया जा सकता है। यदि नीति को ईमानदारी और प्रभावी रणनीति के साथ लागू किया जाए, तो यह भारतीय शिक्षक शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक एवं दीर्घकालिक परिवर्तन लाने में सक्षम सिद्ध हो सकती है (Kumar, 2025)।

अंततः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक शिक्षा को न केवल नई दिशा प्रदान करती है, बल्कि उसे एक नई पहचान भी देती है। यह नीति शिक्षक शिक्षा को अधिक सशक्त, समावेशी तथा वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त बनाने की संभावनाओं को सुदृढ़ करती है। इसके माध्यम से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी, उत्तरदायी और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति संभव है (Rao, 2021)।

संदर्भ :

- Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India. https://www.education.gov.in/en/node/20488
- UNESCO. (2020). Teachers and teaching in a changing world. UNESCO Publishing. https://unesdoc.unesco.org
- National Council for Teacher Education. (2021). National Professional Standards for Teachers (NPST): Overview. https://ncte.gov.in/website/NPST/NPSTOverview.aspx
- Rao, A. S. (2021). *Feedback on Indian NEP (National Education Policy) to Ensure Faculty Parity, Devolution of Power, Function with Manageable Units and Achieve Global Eminence.* Higher Education Research, 6(3), 63–71. https://doi.org/10.11648/j.her.20210603.12
- Kumar, R. (2022). Teacher education in India: Challenges and prospects. International Journal of Educational Research, 11(3), 45–52.
- Gupta, A., & Pal, S. (2023). National Education Policy 2020 and teacher responsibilities: An analysis. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(2), 4722–4730. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5614

- Surjan, P. K., Chandoria, V. K., & Singh, P. (2023). Four-year integrated teacher education programme proposed by National Education Policy 2020: An analytical study. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(1), 964–970. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.2718
- Rudupra, R. (2025). Innovative practices in teacher education in India: A review of related literature on NEP-aligned reforms. International Education and Research Journal. https://doi.org/10.5281/zenodo.18082535
- **Kumar, S.** (2025). *The role of technology in NEP 2020: Opportunities and challenges. International Journal of Advanced Academic Studies, 7*(4), 106–109. https://doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i4b.1433

Cite this Article:

बाजपेयी. डॉ. नितिन (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का अध्ययन. The Research Dialogue, 5(2), 200–207., Volume-05, Issue-02, July-2026, DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.22

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

\

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. नितिन बाजपेयी

For publication of Research Paper title

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा एवं शिक्षक तैयारी की बदलती भूमिका का अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.22